



### उपनिवेशवाद का वित्तीय चरण

**उद्देश्य :**

1. **भारत को ब्रिटिश पूँजी निवेश के लिए खोलना-** ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप बड़ी मात्रा में पूँजी का संचय हो गया था। अतः प्रश्न यह था इस पूँजी को कहाँ निवेशित किया जाये कि पूँजी पर अधिक मुनाफा प्राप्त हो सके। चूँकि उपनिवेश में श्रम सस्ता था, इसलिए पूँजी पर अधिक मुनाफे की गुंजाईश थी। अतः 1858 के पश्चात् भारत में बड़ी मात्रा में ब्रिटिश पूँजी का आगमन हुआ तथा यह पूँजी रेलवे, खनन क्षेत्र, नौपरिवहन क्षेत्र, सरकारी खर्च, चाय एवं कॉफी बागान आदि क्षेत्रों में लगायी गयी। इस काल में भारत सरकार का एक महत्वपूर्ण दायित्व रहा था भारत में ब्रिटिश पूँजी निवेश को प्रोत्साहन देना तथा भारत से ब्रिटेन की ओर कर्ज की अदायगी।
2. **भारत में 1857 के महाविद्रोह जैसी घटना की पुनरावृत्ति को रोकना-** 1857 के महाविद्रोह के समय भारत में ब्रिटिश शासन का लगभग खात्मा हो चुका था। अतः इस घटना से ब्रिटिश ने बड़ी सीख ली और 1857 के पश्चात् ब्रिटिश नीति का मुख्य बल रहा था 1857 के महाविद्रोह जैसी घटना की पुनरावृत्ति को रोकना।

#### राजनीतिक नीति

1857 के महाविद्रोह से ब्रिटिश सरकार ने बड़ी सीख ली। उसने उस विद्रोह के मध्य महसूस किया कि यह विद्रोह मुख्यतः प्रत्यक्ष नियंत्रण वाले क्षेत्र में घटित हुआ था, जबकि अप्रत्यक्ष नियंत्रण वाला क्षेत्र अपेक्षाकृत शांत था। इसलिए ब्रिटिश क्राउन ने प्रत्यक्ष नियंत्रण की जगह अप्रत्यक्ष नियंत्रण पर बल दिया।

1 नवम्बर, 1858 को महारानी विक्टोरिया की घोषणा

आयी। उसमें भारतीय राज्यों की विलय की नीति का परित्याग किया गया। साथ ही, भारतीय शासकों को यह आश्वासन दिया गया कि कम्पनी के द्वारा उनके साथ जो भी अनुबंध अथवा समझौते किये गये हैं, उन्हें सुरक्षित रखा जायेगा।

परंतु इसका अर्थ यह नहीं था कि इस घोषणा के पश्चात् ब्रिटिश क्राउन और भारतीय राज्यों के बीच संबंधों का आधार बदल चुका था, बल्कि केवल ब्रिटिश क्राउन ने अपने कार्य करने का तरीका बदला था और प्रत्यक्ष नियंत्रण की जगह अप्रत्यक्ष नियंत्रण पर बल दिया गया। व्यवहार में भारतीय राज्य अपनी शक्ति और प्रभाव खोते रहे।

1. 1876 में लॉर्ड लिटन द्वारा राजकीय उपाधि अधिनियम लाया गया। इसके आधार पर महारानी विक्टोरिया अब भारत की साम्राज्ञी बन चुकी थी। 1877 में दिल्ली दरबार का आयोजन हुआ जिसमें भारतीय शासकों को शामिल होना पड़ा। अब उनकी वास्तविक स्थिति सामंतों की तरह हो गई तथा ब्रिटिश क्राउन ही तय करने लगा कि किस शासक को कौन-सी उपाधि और किसे, कितनी तोपों की सलामी मिलेगी।

2. इस महाविद्रोह के पश्चात् लॉर्ड कैनिंग के द्वारा भारतीय शासकों के संबंध में एक नयी नीति आरंभ की गई। उसके अनुसार, भारतीय शासक और कुलीन, सामान्य भारतीयों के नेता होते हैं। अतः जब तक ब्रिटिश का उन पर प्रभाव रहेगा ब्रिटिश शासन सुरक्षित रहेगा। इसी नीति के तहत उन्होंने भारतीय राज्यों को संरक्षण देना आरंभ किया। परन्तु आगे इन राज्यों को ब्रिटिश ने संकेत दे दिया कि उन्हें तभी तक संरक्षण प्राप्त होगा, जब तक उनका अपनी प्रजा पर प्रभाव है क्योंकि तभी ये शासक ब्रिटिश के लिए उपयोगी हो पाते।

3. इसी काल में आधुनिक यातायात एवं संचार व्यवस्था के रूप में रेलवे और टेलीग्राफ का विकास हो रहा था। भारतीय शासकों पर यह दबाव था कि वे रेलवे और टेलीग्राफ लाइन को अपने क्षेत्र में जाने से नहीं रोक सकते थे। इस तरह व्यावहारिक रूप से आधुनिक यातायात एवं संचार के माध्यम से भारतीय राज्य ब्रिटिश भारत के साथ जकड़े जा चुके थे।

### प्रशासनिक नीति

इस दौर में अंग्रेजों की प्रशासनिक नीति का मूल उद्देश्य भारतीयों को असंतुष्ट किये बिना भारतीय प्रशासन पर अपनी पकड़ को मजबूत करने पर था—

- ब्रिटिश क्राउन द्वारा ईस्ट इंडिया कंपनी के शासन को समाप्त कर भारतीय प्रशासन का नियंत्रण अपने हाथों में ले लिया गया।
- भारत के प्रशासन के लिये लंदन में एक 'राज्य सचिव' के पद का सृजन किया गया, यह भारतीय प्रशासन का मुख्य अधिकारी था। उसके कार्यों में सहायता के लिये एक 15 सदस्यीय परिषद् का गठन किया गया।
- भारत का प्रशासन गवर्नर-जनरल के हाथों में ही रहा तथा प्रांतों में भी गवर्नर बने रहे, किंतु भारत के गवर्नर-जनरल को अब वायसरॉय कहा जाने लगा क्योंकि वह अब ब्रिटिश ताज का प्रतिनिधि था।
- 1861 के अधिनियम के आधार पर प्रशासनिक शक्ति का पृथक्करण शुरू हुआ। उदाहरणस्वरूप, कानून बनाने की शक्ति प्रांतों के पास फिर से वापस आ गई थी। यह प्रक्रिया 1919 के भारतीय शासन अधिनियम तक पूरी हो चुकी थी।
- वित्तीय शक्तियों के हस्तांतरण की प्रक्रिया लॉर्ड मेयो के काल में शुरू हुई और लिटन एवं रिपन के काल में इसका काफी विकास हुआ।
- सिविल सेवाओं में सुधार हेतु पहल की गई एवं एक नई सेवा के रूप में 'स्टेट्यूटरी सिविल सर्विस' की शुरुआत की गई। इस सेवा में कुछ कुलीन भारतीयों को प्रतिनिधित्व दिया जाना था।
- सैनिक सुधार की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाए गए—
  - सेना में भारतीय सैनिकों की संख्या को यूरोपीय सैनिकों की संख्या द्वारा प्रतिसंतुलित किया गया।
  - तोपखाने जैसे महत्वपूर्ण विभाग को ब्रिटिश रेजीमेंट के अंतर्गत ही रखा गया।
  - भारतीय रेजिमेंटों को जाति और क्षेत्र के आधार पर विभाजित किया गया।

- 'लड़ाकू जाति' के सिद्धांत के तहत राजनीतिक दृष्टि से सजग क्षेत्रों से सैनिकों की नियुक्ति को हतोत्साहित किया गया।

- भारत में 1861 के अधिनियम द्वारा पुलिस प्रशासन का पुनर्गठन किया गया।

**प्रश्न: 1858 के पश्चात् भारत में ब्रिटिश क्राउन के द्वारा प्रशासन के क्षेत्र में किये जाने वाले सुधारों का मौलिक उद्देश्य 1857 के महाविद्रोह जैसी घटना की पुनरावृत्ति को रोकना था। परीक्षण कीजिए।**

**उत्तर:** 1858 के वर्ष को भारत में ब्रिटिश शासन के इतिहास में एक नये युग का आरंभ माना जाता रहा है। 1858 में भारत का प्रशासन ब्रिटिश क्राउन ने अपने हाथों में ले लिया तथा भारत में अनेक प्रकार के प्रशासनिक सुधार के लिए पहल की गई। परन्तु गौर से देखने पर यह ज्ञात होता है कि ये सुधार महज ढाँचे के स्तर पर रहा था, उद्देश्य के स्तर पर नहीं।

भारत के प्रशासन के लिए लंदन में भारत सचिव के पद एवं उसके कार्यों में सहायता के लिए 15 सदस्यीय परिषद् का गठन किया गया। भारत में गवर्नर-जनरल और गवर्नर पहले की तरह ही कायम रहे, किंतु भारत के गवर्नर-जनरल को अब वायसरॉय कहा जाने लगा।

1861 के अधिनियम के आधार पर विधि निर्माण का विकेन्द्रीकरण तथा उसके पश्चात् वित्तीय विकेन्द्रीकरण को प्रोत्साहन दिया गया परन्तु उनमें भारतीयों को कोई भागीदारी नहीं दी गई।

सैन्य एवं पुलिस सुधार के क्षेत्र में भी पहल की गई, परन्तु उसका उद्देश्य भारत पर ज्यादा कठोर नियंत्रण बनाये रखना था। उसी प्रकार, सिविल सेवा अथवा लोकल सेल्फ गवर्मेंट जैसे सुधार महज भारतीय राष्ट्रवादियों के बहलाने के लिए लिये लाये गये थे।

कुल मिलाकर उपर्युक्त जो भी सुधार दिखते हैं, वे ऊपरी एवं सतही थे तथा उनका वास्तविक उद्देश्य भारत पर अधिक सक्षम नियंत्रण स्थापित करना था।

### आर्थिक नीति

- कृषि

1. भू-राजस्व की पुरानी पद्धति प्रचलित रही अर्थात् स्थायी बंदोबस्त, रैयतवाड़ी एवं महालवाड़ी व्यवस्था पहले की तरह कायम रही।
2. सरकार के द्वारा किसानों की सुरक्षा के लिए कदम उठाकर अपने प्रभाव क्षेत्र को बढ़ाने का प्रयत्न किया गया। 1859 तथा 1885 का बंगाल रैयतवाड़ी अधिनियम के द्वारा किसानों को जमींदारों से सुरक्षा एवं 1879 के दक्कन सहायता कानून और 1900 के पंजाब लैंड एलियेशन एक्ट के द्वारा किसानों को महाजनों से रक्षा करने का प्रयत्न किया गया।

3. अकाल एवं ग्रामीण ऋणग्रस्तता जैसी ज्वलंत समस्या को भारतीय राष्ट्रवादियों द्वारा उठाया गया।

- गृह व्यय-प्रत्येक वर्ष ऋण एवं ब्याज की रकम भारत से लंदन हस्तांतरित होने लगा।
- औद्योगीकरण की प्रवृत्ति-भारतीय पूँजीपतियों की पहल पर भारत में औद्योगीकरण आरंभ हुआ।

### भारत में ब्रिटिश पूँजी का आगमन तथा गृह व्यय की समस्या

- 1858 के पश्चात् भारत में बड़ी मात्रा में ब्रिटिश पूँजी का आगमन हो रहा था। यह पूँजी निम्नलिखित रूप में आ रही थी-
1. ऋण के रूप में: रेलवे, सरकारी खर्च आदि पर ऋण लिया गया था। यह ऋण ब्याज के साथ वापस जा रहा था।
  2. निवेश के रूप में: जहाजरानी उद्योग, खनन उद्योग, चाय एवं कॉफी, बागान उद्योग व्यापार में निवेश आदि। यह पूँजी मुनाफे के साथ भारत से लंदन वापस जा रही थी।

### गृह व्यय ( Home Charges ) से क्या तात्पर्य है?

- गृह व्यय से तात्पर्य है प्रतिवर्ष भारत से लंदन की ओर एक निश्चित रकम का हस्तांतरण। यह रकम भारत सरकार का दायित्व था। इसमें कई मदें शामिल थीं-
1. रेलवे पर प्रत्याभूत ब्याज।
  2. सरकारी कर्ज पर ब्याज।
  3. ब्रिटेन में भारतीय सैनिकों के लिए की जाने वाली सैनिक सामग्रियों की खरीद, भारत सचिव के लंदन ऑफिस का खर्च आदि।
  4. अवकाश प्राप्त ब्रिटिश अधिकारियों की पेंशन (यह गौर करने वाली बात है कि गृह व्यय में ब्रिटिश ऋण की राशि शामिल है, परन्तु निवेश की राशि शामिल नहीं है।)



### गृह व्यय की प्रकृति के बारे में विवाद

- दादाभाई नौरोजी ने गृह व्यय की आलोचना करते हुए उसे धन की निकासी करार दिया। उन्होंने निम्नलिखित आधार पर इसकी आलोचना की-
1. ब्रिटिश ने अत्यधिक ब्याज पर ऋण लेकर रेलवे में पूँजी लगाई, जबकि भारत की जरूरत थी सिंचाई व्यवस्था का

विकास, न कि रेलवे।

2. ब्रिटिश ने जो पूँजी (रकम) निवेश की थी, वह कोई नई रकम नहीं थी, बल्कि वह रकम थी जो ब्रिटिश पहले उठा कर ले जा चुके थे।

3. अगर सिविल सेवा का भारतीयकरण पर दिया जाता, तो भारत से लंदन की ओर रकम भेजने की जरूरत नहीं रह जाती क्योंकि अवकाश प्राप्त अधिकारी भारत के अंदर ही होते।

- मैरिसन जैसे ब्रिटिश पक्षधर विद्वानों ने धन की निकासी की अवधारणा को अस्वीकार किया है। उनके अनुसार, गृह व्यय की रकम अधिक नहीं थी और फिर यह रकम भारत के विकास के लिए आवश्यक थी।

- संतुलित विचार: यद्यपि गृह व्यय की सम्पूर्ण रकम धन की निकासी नहीं थी, किन्तु उसका एक बड़ा भाग धन की निकासी अवश्य थी, जबकि एक भाग भारत पर खर्च हुआ था।

क्या केवल गृह व्यय के एक भाग को ही धन की निकासी के अंतर्गत रखा जाना चाहिए अथवा उसमें और भी मदों को शामिल करने की जरूरत है?

इसमें निम्नलिखित मदों को भी शामिल किया जाना चाहिए-

1. ब्रिटिश अधिकारियों के वेतन का वह भाग जो वे यहाँ से बचाकर लंदन भेजते थे।
2. ब्रिटिश व्यापारियों का मुनाफा, जो वे भारत से ब्रिटेन ले जाते थे।
3. 1870 के दशक में जब स्वर्ण आधारित ब्रिटिश पाउण्ड की तुलना में चाँदी आधारित भारतीय रूपया का अवमूल्यन हुआ, तो निकासी की वास्तविक रकम बढ़ गयी।

धन की निकासी पर दादाभाई नौरोजी के विचारों की सीमाएँ दर्शाइये-

1. वे सिद्ध करना चाहते थे कि जो रकम भारत से बाहर हस्तांतरित हुई थी, वह धन नहीं था, बल्कि पूँजी थी।
  2. भारत के शोषण के लिए भारत में कार्य करने वाले बस मुट्ठीभर अंग्रेज उत्तरदायी थे।
  3. वे धन की निकासी के आकलन में सिर्फ सरकारी हस्तांतरण की गणना करते हैं, निजी तौर पर किये जाने वाले हस्तांतरण की नहीं।
- फिर भी, दादाभाई नौरोजी को इस बात का श्रेय अवश्य मिलना चाहिए कि वे ऐसे आर्थिक चिंतक हैं जिन्होंने कार्ल मार्क्स के बाद औपनिवेशिक अर्थव्यवस्था की इतनी व्यापक आलोचना की हो।

## भारत में आधुनिक उद्योगों का उदय

- भारतीय पूँजीपतियों द्वारा पश्चिमी तट पर कपास से निर्मित वस्तुओं के उद्योगों की आधारशिला रखी गई। कावसजी नानाभाई के नेतृत्व में बम्बई प्रेसीडेंसी के भड़ौच में पहली बार सूती वस्त्र उद्योग की शुरुआत की गई। तत्पश्चात् बहुत जल्द ही पश्चिमी तट पर सूती वस्त्र के कई उद्योग शुरू हो गए।
- 1855 में एक ब्रिटिश उद्यमी जॉर्ज ऑकलैंड ने बंगाल के रिशारा में पहली आधुनिक जूट मिल की स्थापना की। तत्पश्चात् बंगाल जूट मिल उद्योगों का एक प्रमुख केंद्र बन गया।
- ब्रिटिश नीति का जोर भारत में औद्योगीकरण को प्रोत्साहित करने पर नहीं था। इसलिये औद्योगीकरण के मार्ग में कई बाधाएँ सामने आईं, जो इस प्रकार थीं-
  1. तकनीकी शिक्षा की कमी और प्रशिक्षित श्रमिकों की कमी।
  2. साख (Credit) की अनुपलब्धता।
  3. ब्रिटिश प्रबंध एजेंसियों का पक्षपातपूर्ण दृष्टिकोण।
  4. भारतीय उद्योगों के संरक्षण का अभाव।

## भारत में औद्योगीकरण की प्रगति

1. **प्रथम विश्वयुद्ध**- प्रथम विश्वयुद्ध के परिणामस्वरूप यूरोपीय अर्थव्यवस्था में संकट का दौर आरंभ हो गया था। इस स्थिति का लाभ भारतीय अर्थव्यवस्था को मिला। इस अवधि के दौरान भारतीय पूँजी का निवेश सीमेंट उद्योग, कागज उद्योग, काँच उद्योग, लोहा और इस्पात आदि उद्योगों में हुआ।
2. **विश्व आर्थिक मंदी (1929-30 ई.)**- यह पूँजीवाद का दूसरा संकट था। वैश्विक आर्थिक मंदी के दौरान पश्चिमी पूँजीवादी देशों में माँग एवं आपूर्ति शृंखलाएँ बाधित हो गईं। इसके परिणामस्वरूप यूरोप से होने वाले आयात में कमी आई। इसका लाभ घरेलू पूँजीपतियों को मिला। घरेलू माँग को पूरा करने के लिये इन देशी पूँजीपतियों द्वारा नवीन उद्योगों की स्थापना की गई।
3. **द्वितीय विश्वयुद्ध**- इस अवधि के दौरान भी भारतीय उद्योगों का काफी विकास हुआ।

**प्रश्न:** ब्रिटिश भारतीयों के प्रति पितृवत् चिंतन व्यक्त करते थे, परन्तु ब्रिटिश शासन के अंतर्गत घटित होने वाले बार-बार अकाल उनकी वास्तविकता की पोल खोलते जान पड़ते। टिप्पणी कीजिए।

**उत्तर:** ब्रिटिश भारतीयों को यह एहसास दिलाने का प्रबल प्रयत्न कर रहे थे कि वे भारतीयों के शुभ चिंतक हैं। परन्तु उस काल में बार-बार घटित होने वाले अकाल तथा उन अकालों

के प्रति ब्रिटिश प्रतिक्रिया अलग प्रकार की वास्तविकता को दर्शाते हैं। (उनकी साम्राज्यवादी स्वार्थता को दर्शाते हैं)।

भारतीय इतिहास के अधिकांश काल में अकाल के लिए जलवायु संबंधी कारक उत्तरदायी माने जाते रहे हैं, परन्तु ब्रिटिश शासन के अंतर्गत घटित अकालों के लिए बहुत हद तक ब्रिटिश नीति उत्तरदायी रही थी, यथा- किसानों पर भू-राजस्व का अत्यधिक अधिभार, कारीगरी उद्योगों का पतन, नकदी फसलों की खेती के कारण मोटे अनाजों की पैदावार में गिरावट, भारत से बाहर अनाजों का निर्यात करना आदि।

सबसे बढ़कर, अकाल को दूर करने के लिए ब्रिटिश ने कोई ठोस कदम नहीं उठाये। 1877-78 में गुजरात एवं दक्कन के अकाल के पश्चात् उस पर विचार करने के लिए स्ट्रैची कमीशन का गठन हुआ। उसकी अनुशंसा पर 1883 में अकाल संहिता निर्मित हुई। उसमें प्रावधान था कि अगर तीन-चौथाई फसल नष्ट हो जाये तो भू-राजस्व की राशि माफ कर दी जायेगी, किन्तु व्यवहार में ऐसा नहीं हो पाता था।

सबसे बढ़कर, किसानों की पहली जरूरत थी भू-राजस्व का दबाव कम करना, परन्तु इस पर ब्रिटिश सरकार कोई भी रियायत देने के लिए तैयार नहीं थी।

इसलिए भारतीयों के संदर्भ में ब्रिटिश सरकार की कथनी और करनी में काफी अंतर था।

**प्रश्न:** ब्रिटिश शासन के अंतर्गत भारत के आधुनिक उद्योगों के विकास पर आलोचनात्मक टिप्पणी कीजिए।

**उत्तर:** ब्रिटिश साम्राज्यवादी लेखकों ने भारत के आधुनिकीकरण का श्रेय ब्रिटिश को देते हुए यह दावा किया कि ब्रिटिश ने भारत में औद्योगीकरण किया। परन्तु सूक्ष्म परीक्षण करने के पश्चात् निम्नलिखित बातें प्रकट होती हैं। प्रथम, ब्रिटिश ने सदा भारत में उद्योगों के विकास को रोकने का प्रयास किया था। इसका कारण था भारत का विकास ब्रिटिश विनिर्मित वस्तुओं के उत्पाद के रूप में करने का प्रयास। इसलिए ब्रिटिश अधिकारियों ने बैंकिंग, मैनेजिंग एजेंसी आदि क्षेत्रों में भारतीय उद्योगों के साथ एक प्रकार का भेदभाव किया।

दूसरे, भारतीय पूँजीपतियों ने ब्रिटिश विरोध के बावजूद अपने प्रयास से औद्योगीकरण के लिए पहल की थी। आगे की घटनाओं से यह ज्ञात होता है कि भारत में आधुनिक उद्योगों की प्रगति तब हुई, जब भारत पर ब्रिटेन का औद्योगिक नियंत्रण कमजोर हुआ। इसे निम्नलिखित कारणों से जोड़ कर देखा जाता है-

1. **प्रथम विश्व युद्ध का प्रभाव:-** इस काल में ब्रिटिश पूँजीवाद का मुख्य कार्य क्षेत्र ब्रिटेन हो गया तथा भारत पर ब्रिटिश पूँजी का दबाव कम हुआ। भारतीय पूँजीपतियों ने उसका फायदा उठाकर नये क्षेत्रों में पूँजी का विस्तार किया। उदाहरण के लिए, लौह-इस्पात उद्योग, कागज उद्योग, शीशा उद्योग, माचिस उद्योग आदि। इसके अतिरिक्त

घनश्याम दास बिरला एवं हुकुम चंद ने बंगाल में उद्योग स्थापित करने के लिए कदम रखे। इस काल में भारतीय पूँजीवाद का एक स्वाभाविक परिणाम था 1927 में फिक्की का गठन।

2. **1928-30 की विश्व आर्थिक मंदी:-** इस मंदी के काल में संकट का सामना करने के लिए ब्रिटिश पूँजी भारत से निकल गयी। इसका फायदा भारतीय पूँजीपतियों को मिला।
3. **द्वितीय विश्व युद्ध:-** द्वितीय विश्व युद्ध के काल में भारतीय पूँजीपतियों ने ब्रिटिश पूँजी के संकट का फायदा उठाकर नए क्षेत्र में विस्तार किया।

**प्रश्न: यह स्पष्ट कीजिए कि 1857 का विप्लव ( विद्रोह ) किस प्रकार भारत के प्रति ब्रिटिश नीति के विकास क्रम में एक ऐतिहासिक मोड़ सिद्ध हुआ?**

**उत्तर:** 1857 के विप्लव ने भारत में ब्रिटिश शासन को लगभग समाप्त कर दिया था। अतः इस विप्लव के दमन के पश्चात् भारत में ब्रिटिश नीति की पहली प्राथमिकता रही थी इसकी पुनरावृत्ति की संभावना को समाप्त करना।

अतः 1858 के पश्चात् भारत के संबंध में ब्रिटिश नीति को उपर्युक्त उद्देश्य के परिप्रेक्ष्य में समझने की जरूरत है। ये इस प्रकार हैं -

1. भारत का प्रशासन सीधे ब्रिटिश क्राउन के अंतर्गत ले लिया गया तथा महारानी विक्टोरिया की प्रसिद्ध घोषणा ने क्राउन एवं भारतीय शासकों के बीच विश्वास बहाल करने का प्रयास किया।
2. प्रशासनिक क्षेत्र में इस प्रकार से सुधार एवं परिवर्तन लाये गये, ताकि एक तरफ भारतीयों पर ब्रिटिश नियंत्रण मजबूत हो, दूसरी तरफ उनमें ब्रिटिश शासन के विरुद्ध असंतोष भी न हो। इसे निम्नलिखित उदाहरणों के माध्यम से समझा जा सकता है- भारत के प्रशासन के लिए 'भारत सचिव' पद का सृजन, 1861 के अधिनियम के आधार पर प्रशासनिक विक्रेन्द्रीकरण तथा 1870 के दशक तक वित्तीय विक्रेन्द्रीकरण का आरंभ, साथ ही 'स्टेट्यूटरी सिविल सेवा' का सृजन कर पहली बार कुछ भारतीयों को शामिल करना।



3. फिर ब्रिटिश शासन को ठोस आधार देने के लिए आंतरिक सुरक्षा को मजबूत करना आवश्यक था। अतः सैन्य एवं पुलिस सुधार के लिए कदम उठाये गये। सैन्य सुधार के क्रम में भारतीय तथा यूरोपीय तत्वों के बीच संतुलन बनाये रखने, तोपखाना यूरोपीय अधिकारियों के अधीन रखने तथा विभिन्न रेजिमेंटों को जाति एवं क्षेत्र के आधार पर विभाजित करने का निर्णय लिया गया।
4. अंत में, ब्रिटिश शासन को दीर्घजीवी बनाने के लिए 'फूट डालो और राज करो' की नीति के तहत हिन्दू और मुस्लिम को परस्पर विभाजित करने का प्रयास किया गया। इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत के संदर्भ में ब्रिटिश भारत के इतिहास में 1857 का महाविप्लव एक विभाजक रेखा सिद्ध हुआ।

### सामाजिक नीति

- 1857 के महाविद्रोह से सबक लेते हुए ब्रिटिश क्राउन द्वारा भारत के सामाजिक क्षेत्र के मामले में अहस्तक्षेप की नीति अपनाई गई। इस काल में ब्रिटिश के द्वारा जो भी सुधार और परिवर्तन किये गए, वे भारतीय राष्ट्रवादियों के दबाव में आकर किये गए थे। उदाहरण के लिए बहराम जी मालावाडी की पहल पर 1891 में 'एज ऑफ कसेंट बिल' लाया गया। इसके आधार पर लड़कियों के विवाह की उम्र बढ़ायी गयी। उसी प्रकार 1929-30 में हर विलास शारदा की पहल पर 'शारदा एक्ट' लाया गया जिसके तहत लड़के एवं लड़कियाँ दोनों के विवाह की उम्र बढ़ायी गयी।

### सांस्कृतिक नीति

- ब्रिटिश द्वारा नस्लीय भेदभाव की नीति पर बल देते हुए भारतीयों को असभ्य एवं बर्बर के रूप में चित्रित किया गया। यहाँ तक कि 'विक्टोरियाई साइंस' ने भी नस्लीय विभाजन का समर्थन किया।
- ब्रिटिश ने हिंदू और मुस्लिम समुदायों के बीच विभाजन के लिये 'फूट डालो और राज करो' की नीति अपनाई।
- ब्रिटिश के द्वारा धर्म के आधार पर जनगणना पर बल दिया गया।